Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

यात्रा साहित्य के जनक महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

Bandana Mishra*

Research Scholar, Department of Hindi, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore (MP)

सार – कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ों संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है! यह पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य जगत के उस शख्सियत से हमें रूब-रू करता है, जिसे "हिन्दी ट्रेवलॉग" का जनक माना है। हम बात कर रहे है महापंडित राहुल सांकृत्यायन की, जिन्होंने भारत ही नहीं पूरे संसार को अपना घर समक्षा।

----------X----------

राहुल सांस्कृत्यायन के जीवन का मूलमंत्र ही घुमक्कड़ी यानी गतिशीलता रही है। लेकिन वे घुमक्कड़ी यानी गतिशील रही है। लेकिन वे घुमक्कड़ बने कैसे आज हम वह कहानी भी आप को बता रहे है। दरअसल कनैला से उनके फूफा माहदेव पंडित केदारनाथ को लगभग 1 किलोमीटर दूर है,ले गए और सारस्वत व्याकरण पढ़ाना आरंभ किया। पढ़ाई का यह क्रम एक मास ही चल पाया फू फा महादेव पंडित के भाई के बेटे योगेश से केदार की घनिष्ठता हो गई। आगे चल कर केदार की कई यात्राओं में योगेश उनके साथी रहे। इसी साल केदार नाथ का जनेऊ संस्कार विंध्याचल (मिर्जापुर) में हुआ। केदार ने रेल की यात्रा की। केदार की आगे की साहसपूर्ण यात्राओं का शुभारंभ भी इसी समय हुआ। आगे की साहसिक यात्राओं की प्रेरणा भी केदारनाथ को शीघ्र ही मिलने वाली थी। दूसरा दर्जा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप तीसरे दर्जा में पहुँचे तो उर्दू की नई पाठय-पुस्तक में आपको एक शेर पढ़ने को मिला-

"सैर कर दुनिया की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ।

जिंदगी गर कुछ रही तो, नौजवानी फिर कहाँ?"

यही से आरंभ हुआ केदार का यायावरी जीन। और उनका नारा था-चरैवति! चरैवति! यानी चलते रहो! चलते रहो! फिर क्या था। 1907 से ही राहु जी के घुमक्कड़ी जीवन का आरंभ हो गया। यह क्रम मृत्यु तक चलता रहा। बाद में तो उन्होनें घुमक्कड़ शास्त्र भी लिख। उनका कहना था घुमक्कड़ी एक रस है, जो काव्य के रस से किसी तरह भी कम नहीं है। घुमक्कड़ी लेखक और कलाकार के लिए धर्म विजय का प्रयाण है, वह कला विजय का प्रयाण है, और साहित्य विजय का भी। राहुल सच्चे माने में घुमक्कड़ थे। उनकी "जीवन-यात्रा इसका दस्तावेज है। उन्होनें देश-विदेश की यात्रायें की थी। सारा हिन्दुस्तान तो घूमे ही लंका, तिब्बत, नेपाल, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, जापान, कारिया, रूस, चीन आदि देशों की यात्रायें की। इसी ज्ञानपिपासा ने राहुल सांकृ त्यायन को दर-दर का ही नहीं देश-विदेश का घुमक्कड़ बनाया। और घुमक्कड़ी ने ही उन्हें राहुल सांकृत्यायन। राहुल जी ऐरे गैरे निरूद्दश्य यात्री नहीं थें। उनकी यात्रा का हर कदम सोचा समझा सुचिन्तित होता था। और वह था राष्ट्रीय अस्मिता की लुप्त रत्न राशि की तलाश एंव आत्म विस्मृत जनमानस में नई चेतना का संचार। इसी से निर्मित था उनका बहुआयामी व्यक्तित्व।!

राहुल जी का जिन लोगों ने नही देखा है और आगे जो लोग उनके बारे में पढ़ेंगे, उन सबके लिए राहुल जी कल्पित कहानी के नायक प्रतीत होंगं। लम्बा कद, लम्बे-लम्बे हाथ-पांव, रंग गोरा, सिर के छोटे छोटे बाल, दूर की यात्राओं के प्रभाव से भरी हुई आँखें, मुखमुद्रा से टपकता हुआ अपार स्नेह और ममता। सामुहिक जीवन, भौतिक जगत और मित्रों के प्रति उनके मन में किना प्रेम था, यह उनके रूपाकृति से ही झलकता था, उनके चेहरे पर प्रवासी की सी मानते थे, इसलिए उन्होंने पलायन करने वालों को आवाज दी, "भागो नही, बदलो"। मेरा विचार है कि महापंडित राहुल जी के बारे में "हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता" कहना जरा भी अतिशयोक्ति न होगी।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व और कृतित्व को एक छोटे-मोटे लेख में समेट पाना दुष्कर कार्य हैं। उनके व्यक्तित्व के किसी खास हिस्से की ओर ही कुछ संकेत किया जा सकता है। वे अपने आप में एक सं स्थान किया जा सकता है। वे अपने आप में एक संस्थान थे। जितने व्यापक रूप से उन्होंनें अपनी कलम से नवजागरण का शंख फूंका उतने व्यापक रूप से कोई राजनीतिक पार्टी भी नहीं कर

www.ignited.in

सकी। उनकी पुस्तकों को पढ़कर कितने लोग कुछ माक्र्सवादी हो गये कुछ लोग अन्य राजनीतिक पार्टियों में सम्मिलित हुए और महत्पूर्ण नेता बन गए। उनके व्यक्तित्व को समझने परखने का अर्थ होता है भारतीय जीवन और इतिहास के एक विशेष कालखण्ड को समझना। उनके रचनात्मक कार्यों को देख कर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। किस तरह विराट् चमत्कारिक व्यक्तित्व राहुल जी को मिला था। वे घुमक्कड़ या यायावर होते हुए भी इतनी अधिक पुस्तकें लिख सके। इसे अनुमान कर यह सहज ही काहा जा सकता है कि ऐसे व्यक्ति का आविर्भाव दुर्लभ हुआ करता है या कभी-कभी ही ऐसा पुरूष अवतरित होता हैं। विश्वविख्यात बुद्धिजीवी राहुल सांकृत्यायन के बौद्धिक विकास के पीछे न कोई पारिवारिक सांस्कृतिक परम्परा थी और न ही अर्थ संभार। ज्ञानार्ज न की एक ही आकांक्षा थीः-

फकीरों का जब तक न कासा भरेगा

तेरे दर पै हर वक्त फे री लगेगी।

राहुल जी का वह संदेश हमें आजीवन प्रेरणा देता रहे-भागो नहीं दुनिया को बदलो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) घुमक्कड़ शास्त्र-राहुल सांकृत्यायन

2) राहुल सांकृत्यायन व्यक्ति और वाड्मय-श्री निवास शर्मा

3) महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया-डाक्टर अभिजीत भट्टचार्य

Corresponding Author

Bandana Mishra*

Research Scholar, Department of Hindi, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore (MP)